पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

संस्कृत का पोषण और संवर्धन होना चाहिये - राज्यपाल
संस्कृत भारतीय संस्कृति का आधार है - मुख्यमंत्री

लखनऊ: 7 फरवरी, 2018

लोकभवन में आज उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा संस्कृत के विद्वानों को अंलकृत किया गया। समारोह की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने की तथा मुख्य अतिथि के तौर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उपस्थित थे। कार्यक्रम में ग्राम्य विकास राज्यमंत्री डा0 महेन्द्र सिंह, गुरूकुल प्रभात आश्रम मेरठ के कुलाधिपति एवं विशिष्ट अतिथि स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, संस्थान के अध्यक्ष डा0 वाचस्पति मिश्र, प्रमुख सचिव भाषा श्री जितेन्द्र कुमार, संस्थान के निदेशक श्री हरि बख्श सिंह सहित बड़ी संख्या में संस्कृत अनुरागीजन उपस्थित थे। कार्यक्रम में वर्ष 2016 एवं 2017 के लिये विश्व भारती पुरस्कार, महर्षि बाल्मीकि पुरस्कार, महर्षि व्यास पुरस्कार, महर्षि नारद पुरस्कार, विशिष्ट पुरस्कार, वेद पंडित पुरस्कार, नामित पुरस्कार, विशेष पुरस्कार तथा विविध पुरस्कार दिये गये। सबसे बड़ा पुरस्कार 'विश्व भारती' 2016 के लिये आचार्य जगन्नाथ पाठक व 2017 के लिये आचार्य केशवराव सदाशिवशास्त्री मुसलगाँवकर को क्रमशः 5-5 लाख रूपये की धनराशि दी गई।

राज्यपाल ने कहा कि संस्कृत भाषा के विकास के लिये संस्कृत के विद्वान समर्पित भाव से विचार करें। संस्कृत के उत्थान एवं अधिक लोकप्रिय बनाने के लिये प्रयास करना होगा। उन्होंने कहा कि 'संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष श्री वाचस्पति मिश्र की इच्छा थी कि यह सम्मान समारोह राजभवन में आयोजित हो। राजभवन में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की अपनी गरिमा होती है। संस्कृत को लोकप्रिय बनाना है इसलिये मेरा विचार था कि संस्कृत को राजभवन से लोकभवन में ले जाने की जरूरत है। योग और कुम्भ की लोकप्रियता को देखते हुए यूनेस्को ने अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर इसे मान्यता दी है'। उन्होंने कहा कि संस्कृत को फिर से विश्व स्तर पर स्थापित करने के लिये योग और कुम्भ जैसे उत्साह की जरूरत है। राज्यपाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित संस्कृत सम्मान समारोह का संदेश पूरे देश में जायेगा।

श्री नाईक ने कहा कि संस्कृत को देवभाषा कहा जाता है जो देश के शास्त्र की भी भाषा है। संस्कृत को जाने बिना भारतीय संस्कृति की महत्ता को नहीं जाना जा सकता है। संसार की समस्त प्राचीनतम भाषाओं में संस्कृत भाषा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। साहित्य लोकहित की भावना तथा उपसर्ग द्वारा नये-नये शब्दों के निर्माण की क्षमता के कारण आज भी संस्कृत अजर-अमर है। यह भाषा वैचारिक परम्परा, जीवन दर्शन, मूल्यों व सूक्ष्म चिन्तन की वाहिनी रही है। संस्कृत सही मायनों में भारत की आत्मा है। हमारे देश की हजारों वर्षों की वैचारिक प्रज्ञा को समझने के लिये संस्कृत ही एकमात्र माध्यम है। संस्कृत को न केवल सुरक्षित रखा जाये बल्कि उसका पोषण और संवर्धन भी होना चाहिये। उन्होंने कहा कि प्राचीनतम भाषा के साथ-साथ कम्प्यूटर फ्रेंडली होने के कारण पूरा विश्व संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता व प्रमाणिकता को महसूस कर रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि संस्कृत की सबसे बड़ी विशेषता है कि गंभीर विषय भी सहजता और कम शब्दों में प्रभावी ढंग से कहे जा सकते हंै। उन्होंने विभिन्न घोष वाक्य को उद्धत करते हुए कहा कि लोकसभा अध्यक्ष के आसन पर 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', मुंबई पुलिस के 'सद रक्षणाय, खल निग्रहाय', जीवन बीमा पालिसी के 'योग क्षेमं बहाम्यहम', डाक विभाग के 'अहर्निशं सेवामहे', उच्चतम न्यायालय के 'यतो धर्मस्ततो जयः', भारत सरकार के 'सत्यमेव जयते', दूरदर्शन के 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' आदि से पता चलता है कि संस्कृत आम बोलचाल में भी प्रयोग होती है और सहज भाषा है। उन्होंने बताया कि 1989 में जब वे पहली बार लोकसभा में सांसद चुनकर गये थे तब अपने 23 साथियों के साथ उन्होंने संस्कृत भाषा में शपथ ली थी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। मृत्यु से अमरत्व तक ले जाने वाली संस्कृति संस्कृत भाषा में है। नये शोधों ने संस्कृत को आधार मानते हुये उसके महत्व को स्वीकार किया है। संस्कृत वास्तव में चेतना देने वाली भाषा है। संस्कृत आध्यात्मिक परिवेश का माध्यम है। संस्कृत आज भी भौतिकता के युग में पूरी जीवन्तता से अपनी पहचान बनाये हुये है। संस्कृत के बिना संस्कृति की कल्पना असंभव है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भारतीय संस्कृति का आधार है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 17 वर्षों के बाद संस्कृत का माध्यमिक बोर्ड गठित हुआ है। सरकार ने संस्कृत संस्थान का बजट भी दोगुना किया है। संस्कृत के विद्वान कार्ययोजना बनाकर लघु अवधि पाठ्यक्रम की शुरूआत करें। संस्कृत के

विद्वान प्राचीन ग्रंथों और पाड़लिपियों को एकत्र करके शोध के लिये प्रेरित करें। संस्कृत के साधक संस्कृत भाषा के संरक्षण की जिम्मेदारी लें। सरकार संस्कृत के संवर्धन के लिये हरसंभव प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि विदेश के बासी ज्ञान से हटकर स्वयं नया करने का प्रयास करें।

कार्यक्रम में डा॰0 वाचस्पति मिश्र, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे। प्रमुख सचिव भाषा श्री जितेन्द्र कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया।

अंजुम/ललित/राजभवन (56/9)

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत
लखनऊ
सम्मान स
2016—201
बुधवार 07 फरवरी 2

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
लखनऊ
सम्मान समारोह
2016—2017
बुधवार 07 फरवरी 2018